श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य विरचित

रयणसार

ग्रंथस्योपरि श्रीमद्गणाचार्यविरागसागरवर्येण
विरचिता संस्कृतटीका

रत्नत्रयवर्धिनी

उत्तरार्द्ध

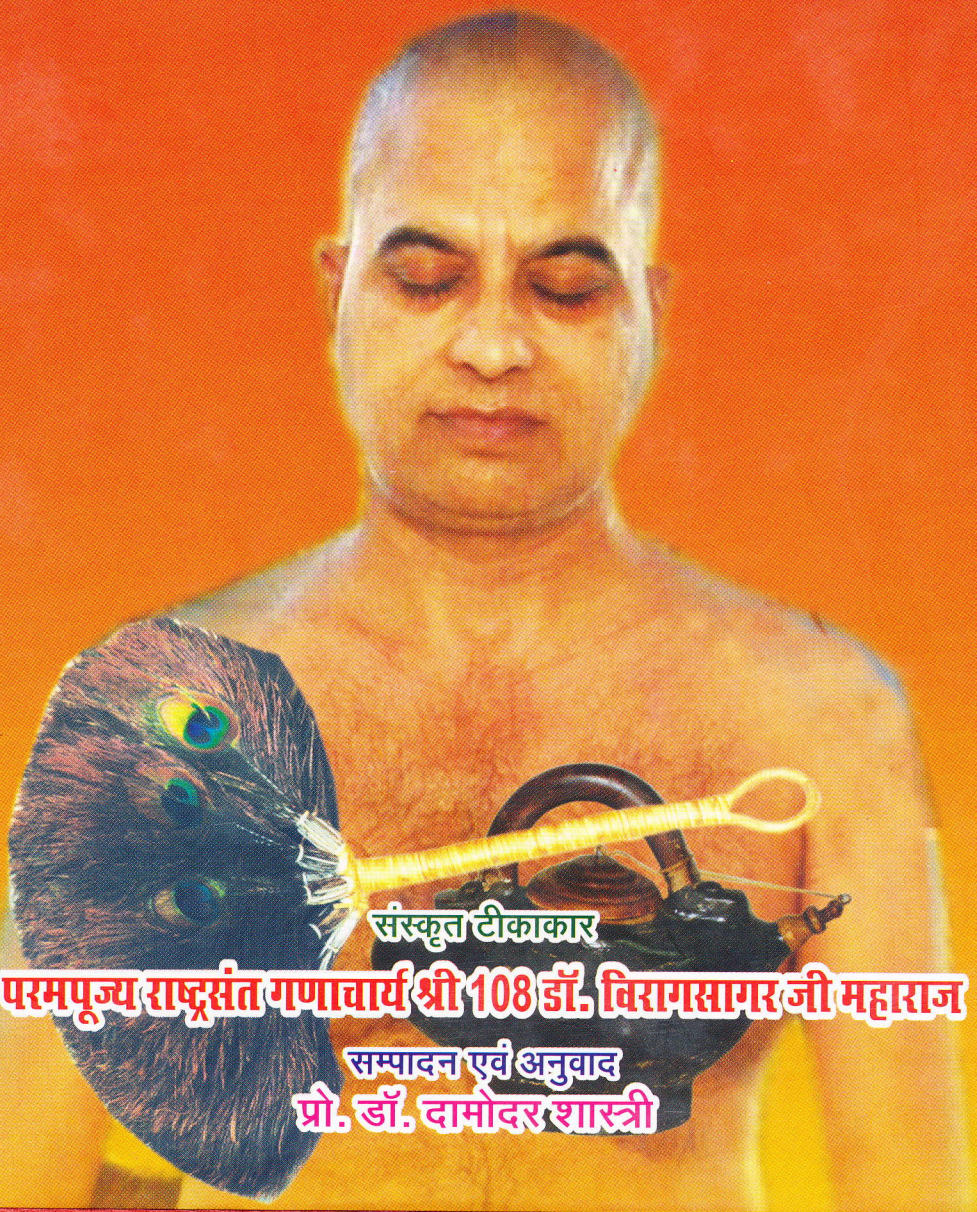

संस्कृत टीकाकार
परमपूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागर जी महाराज
सम्पादन एवं अनुवाद
प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री

[श्रीमद्-भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य-विरचित]

रयणसार

ग्रन्थ पर रचित संस्कृत टीका

रत्नत्रयवर्धिनी

उत्तरार्द्ध

(गाथा 77 से 168 तक)

'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीकाकार

प. पू. गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद

प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रथम संस्करण : 2017 ❑ मूल्य : 650 रुपये